

६्यान्प्रक्रिया संधि / स्थावर जंगम संधि

हरिकथाम्भृतसार गुरुगळ
करुणदिंदापनितु पैळुवे
परम भगवद्कृतरिदनादरदि कैळुवुदु

पादुकेय कंटक सिकत मोद
लादुवनुदिन बाधिसुववे
कादशेंद्रियगळलि बिडदे हङ्षीकपन मूति
सादरदि नेनेववनु ऐनप
राधगळु माडिदरु सरियेनि
रोधगैसवु मोअमागके दुरितराशिगळु ११-१

हगल नंदादीपदंददि
निगमवेद्यन पूजिसुत कै
मुगिटु नाल्करोळोंटु पुरुषाथवनु बोडदलि
जगदुदर कोट्टुदनु भुंजिसु
मग मडदि प्राणेंद्रियात्मा
दिगळु भगवद्धीनवेंदडिगडिगे नेनेवुतिरु ११-२

अस्वतंत्रनु जीव हरि स

वस्वतंत्रनु नित्य सुखमय
निःस्वबद्धाल्पज्ञनशक्त सदुःखि निवीण
हस्वदेहि सनाथजीवनु
विश्वव्यापक कर्त्तव्रह्म स
रस्वतीशाद्यमरनुत हरियेंदु कौडाङु ११-३

मत्ते विश्वाद्येंदु रूपों
भृत्तरिंदलि पैच्चसलु ए
प्पत्तेरडु रूपगळहवु ओंदोंदे साहस
प्पथप्पथकु नाडिगळोळगे स
वोत्तमन तिळियेंदु भीष्मनु
बित्तरिसिदनु धम तनयनिगे शांतिपवदलि ११-४

एंटु प्रकइतिगळोळगे विश्वा
द्येंटु रूपदलिहु भकुतर
कंटकव परिहरिसुतलि पालिसुव प्रतिदिनदि
नैटनंददि एडबिडदे वै
कुंठरमणु तन्नवर नि
ष्कंटक सुमागदलि नडेसुव दुजनर बडिवा ११-५

स्वरमणनु शक्त्यादिरूपदि

करुण मानिगळोळगे नेलेसि
द्वर विदूरनु स्थूलविषयगळुंडुणिप नित्य
अरियदले तानुंबेनेंबुव
निरयगळनुंबुवनु निश्चय
मरळि मरळि भिवाटविय संचरिसि बळलुवनु ११-६

सुरुचि रुचिर सुगंध शुचियें
दिरुतिहनु षड्सगळोळु ह
न्नेरडु रूपदलिष्प श्री भू दुगेयर सहित
स्वरमणनु एप्पत्तेरडु सा
विर समीरन रूपदोळगि
द्वरु पराक्रम कट्ठ एनिसुव नाडिगळोळिदु ११-७

निन्न सवत्रदलि नेनेवव
रन्यकमव माडिरु सरि
पुण्यकमगळेनिसुववु संदेहविनितिल्ल
निन्न स्मरिसदे स्नान जप हो
मान्न वस्त्रगजाश्व भू धन
धान्य मोदलादखिळ धमव माडि फलवेनु ११-८

इष्टभौज्य पदाथदोळु शिपि

विष्टनामदि सव जीवर
तुष्टिपडिसुव दिनदिनदि संतुष्ट तानागि
कोष्टदोळु नेलेसिद्धु रसमय
पुष्टियैदिसुतिंद्रियगळोळु
प्रेष्टनागिद्वेल्ल विषयगळुंब तिक्किसदके ११-९

कारणाव्हय (कारकाव्हय) ज~नान कम
प्रेरकनु तानागि क्रियेगळ
तोरुवनु कमेंद्रियाधिपरोळगे नेलेसिद्धु
मूरुगुणमय द्रव्यग तदा
कार तन्नामदलि करेसुव
तोरिकोळळदे जनर मोहिप मोह कल्पकनु ११-१०

द्रव्यनेनिसुव भूतमात्रदो
ळव्यनु कमेंद्रियगळोळु
भव्य सत्क्रियनेनिप ज~न्यानेंद्रियगळोळगिद्धु
स्तव्य कारनेनिसि सुखमय
सैव्य सैवकनेनिसि जगदोळु
हव्यवाहननणियोळगिप्पंते इरुतिप्प ११-११

मनवे मोदलादिंद्रियगळोळ

गनिलदेवनु शुचियेनिसिकों
डनवरत नेलेसिप्प शुचिशब्दोतनेंदेनिसि
तनुविनोक्तगिप्पनु सदा वा
मन हङ्गषीकैशाख्यरूपद
लनुभवके तंदीव विषयज सुखव जीवरिगे ११-१२

प्रेरक प्रेयरोक्तु प्रेय
प्रेरकनु तानागि हरि नि
वैरदिंद प्रवतिसुव तन्नाम रूपदलि
तोरिकोळळदे सवरोक्तु भा
गीरथीजनकनु सकल व्या
पारगळ ता माडिमाडिसि नोडि नगुतिप्प ११-१३

हरिये मुख्यनियामकनु एं
दरिदु पुण्यापुण्य हरुषा
मरुष लाभालाभ सुखदुःखादि द्वंद्वगळ
निरुत अवनंघिगे समपिसि
नरकभूस्वगापवगदि
करण नियामकन सवत्रदलि नेनेवुतिरु ११-१४

माणवक तत्फळगळनुसं

धानविल्लदे कमगळ स्वै
च्छनुसारदि माडि मोदिसुवंते प्रतिदिनदि
ज्ञानपूर्वक विधिनिषेधग
क्लेनु नोडदे माडु कमप्र
धान पुरुषेशनलि भकुतिय बेडु कोंडाडु ११-१५

हानिवङ्ग्दि जयापजयगळु
ऐनु कोहुदु भुंजिसुत ल
मीनिवासन करुणवने संपादिसनुदिनदि
ज्ञानसुखमय तन्नवर पर
मानुरागादि संतैप दै
हानुबंधिगळंते ओळहोरगिदु करुणाडु ११-१६

आ परम सकलेंद्रियगळोळु
व्यापकनु तानागि विषयव
ता परिग्रहिसुवनु तिळिसदे सवजीवरोळु
पापरहित पुराण पुरुष स
मीपदलि नेलेसिद्दु नाना
रूपधारक तोरिकोळळदे कमगळ माळप ११-१७

खेचररु भूचररु वारि नि

शाचररोक्तिद्वर कमग
ळाचरिसुवनु घनमहिम परमाल्पनोपादि
गौचरिसनु बहु प्रकारा
लोचनेय मादिदरु मनसिंगे
कीचकारि प्रीय कविजन्गोय महराय ११-१८

ओंदे गोत्र प्रवर संैद्या
वंदनेगळनु माडि प्रांतके
तंदे तनयरु बैरे तम्मय पेसरुगोंबंते
ओंदे दैहदोक्तिद्व निंद्या
निंद्यकमव माडि माडिसि
इंटिरेशनु सव जीवरोक्तीशनेनिसुवनु ११-१९

किहृगद्विद लोह पावक
सुहु विंगड माडुवंते घ
रहु व्रीहिगळोक्तिष्प तंदुल कडेगे तेगेवंते
विठ्ठला एंदोम्मे मैमरे
दहृहासदि करेये दुरितग
ळटुक्किय बिडिसवन तन्नोक्तिगिट्टु सलहुवनु ११-२०

जलधियोळु स्वेच्छानुसारदि

जलचर प्राणिगळु तत्तत्
स्थळगळलि संतोषबडुतलि संचरिसुवंते
नक्किननाभनोळब्जभव मु
प्पोळुलुरिग मैगण्ण मोदला
धलवु जीवर गणवु वतिसुतिहदु नित्यदलि ११-२१

वासुदेवनु ओळहोरगे अव
काशदनु (आभासकनु) तानागि बिंब प्र
काशिसुव तद्रूप तन्नामदलि सवत्र
ई समन्वयवेंदेनिप सदु
पासनव गैववनु मोआ
पैएगळोळुत्तमन जीवन्मुक्तनवनियोळु ११-२२

भौग्यवस्तुगळोळगे योग्या
योग्य रसगळनरितु योग्या
योग्यरलि नेलेसिष्प हरिगे समपिसनुदिनदि
भाग्य बडतन बरलु हिंगदे
कुग्गिसोरगदे सद्धकुति वै
राग्य ज्ञान बेडु नी निभाग्यनेनिसदले ११-२३

स्थळ जलाद्रिगळलिल जनिसुव

फल सुपुष्पज गंधरस श्री
तुळसि मोदलादखिळ पुजासाधन पदाथ
हलवु बगेयिंदपिसुत बां
बोळेय जनकगे नित्य नित्यदि
तिळिवुदिदु व्यतिरैक पुजेगळेदु कोविटरु ११-२४

श्रीकरन सवत्रदलि अव
लोकिसुत गुणरूपक्रिय व्यति
रेक तिळियदलन्वयिसु बिंबनलि मरेयदले
स्वीकरिसुवनु करुणदिंद नी
राकरिसदे कडपाळु भक्तर
शोकगळ परिहरिसि सुखवित्तनवरत पोरेव ११-२५

इनितु व्यतिरैकान्वयगलें
देनिप पूजाविधानगळने तिळि
दनिमिषेशन तळप्ति बडिसुतलिरु निरंतरदि
घन महिम कैकाँडु स्थितिम्भिति
जनुमगळ परिहरिसि सेवक
जनरोळिव्हानंद पडिसुव भक्तवत्सलनु ११-२६

जलजनाभनिगोरेडु प्रतिमेग

कळ्योळगे जडचेतनात्मक
चलदोळीबगे स्त्री पुरुष भेददलि जडदोळगे
तिक्लिवुदाहितप्रतिमे सहजा
चलगळेंदीबगे प्रतीकदि
ललित पंचत्रय सुगोळकवरितु भजिसुतिरु ११-२७

वारिजासन वायु वींद्र उ
मारमण नाकेश स्मरहं
कारिक प्राणादिगळु पुरुषर कळेवरदि
तोरिकोळदनिरुद्ध दोष वि
दूर नारायणन रूप श
रीरमानिगळागि भजिसुत सुखव कोडुतिहरु ११-२८

सिरि सरस्वति भारती सौ
पणि वारुणि पावतीमुख
रिरुतिहरु स्त्रीरोळगभिमानिगळु तावेनिसि
अरुण वण निभांग श्री सं
करुषण प्रद्युम्न रूपग
क्लिरुळु हगलु उपासनव गैवुतले मोदिपरु ११-२९

कइतप्रतीकदि तंकि भागव

हुतवहानिल मुख्य दिविजरु
तुतिसिकोळुतभिमानिगळु तानागि नेलेसिद्धु
प्रतिदिवस श्रीतुलसि गंधा
अते कुसुम फल दीप पंचा
मङ्गलदि पुजिप भकुतरिगे कोडुतिहरु पुरुषाथ ११-३०

नगगळभिमानिगळेनिप सुर
रुगळु सहजाचलगळिगे मा
निगळेनिसि श्री वासुदेवन पूजिसुतलिहरु
स्वगतभैद विवजितन नाल्
बगे प्रतीकदि तिळिदु पुजिसे
विगत संसाराब्धि दाटिसि मुक्तरनु माळप ११-३१

आवऐत्रके पोदरेनि
न्नाव तीथदि मुणगलेनि
न्नाव जपतप होम दानव माडि फलवेनु
श्रीवर जगन्नाथ विठ्लन
ई विधदि जंगम स्थावर
जीवरोळु परिपूणनेंदरियदिह मानवरु ११-३२